एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

औषधीय गुणों से भरपुर मेथी की खेती कैसे करें

(*रीतु नायक[1], डॉ. राजश्री गाईन[1] एवं डॉ. मनोज साहू[2])
[1]इ. गा. कृ. वि. वि, रायपुर, छतीसगढ़
[2]कृषि विज्ञान केन्द्र, रायपुर, छतीसगढ़
*संवादी लेखक का ईमेल पता: ritunayak18@gmail.com

मेथी एक पत्तेदार वाली औषधीय फसल है। इनमें औषधीय गुण बहुत हैं। इसका उपयोग मधुमेह रोगियों के लिए विशेष लाभप्रद है। इसकी खुशबू काफी अच्छी होती है। मेथी की पत्तियों तथा दाने दोनों ही रूप में उपयोग किया जाता है। पत्तियों का उपयोग हरी सब्जी के रूप में किया जाता है। हरी पत्तियों में विटामिन ए तथा सी और खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। मेथी के बीजों के औद्योगिक उपयोग भी हैं। यदि किसान मेथी की खेती वैज्ञानिक तकनीक से करें तो वे मेथी से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।

मेथी का वानस्पतिक नाम ''ट्राइगोनेला फोनम ग्रकम' और ट्राइगोनेला कार्निकुलाटा है। यह लेग्युमीनेसी कुल की फसल हे। सामान्य मेथी ''ट्राइगोनेला फोनम'' है तथा दुसरी किस्म '' ट्राइगोनेला कार्निकुलाटा'' है जो कसूरी या चम्पा मेथी भी कहलाती है। इन दोनों प्रकार की मेथी के पौधों की बनावट वृद्धि तथा उपज में थोडी भिन्नता होती है।

मेथी लेग्युमिनस परिवार का पौधा है, जो 1 फुट से छोटा होता है। मेथी दाने में सोडियम, जिंक, फॉस्फोरस, फॉलिक एसिड, आयरन, कैल्सियम, मैग्निशियम, पौटेशियम, जैसे मिनरल्स और विटामिन ए, बी और सी भी पाए जाते हैं। इसके अलावा इसमें भरपुर मात्रा में फाइबर्स, प्रोटीन, स्टार्च, फॉस्फोरस एसिड जैसे न्यूट्रिएंट्स पाए जाते हैं। पेट संबंधी बीमारियों में यह काफी फायदेमंद है। इसके सेवन करने से जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है।

उच्च रक्तचाप (हाई बीपी), डायबिटीज व अपच में इसका उपयोग बहुत ही लाभकारी है। हरी मेथी ब्लड शुगर कम करने में मदद करती है। इस प्रकार इसका सेवन कई बिमारियों में ईलाज के रूप में किया जाता है। हरी मेथी हो या दाना मेथी दोनों प्रकार से इसका सेवन शरीर को स्वस्थ रखने में मददगार है।

जलवायु-मेथी ठंडे मौसम की फसल है। इसमें शीत लहर व पाला सहन करने की अपेक्षाकृत अधिक शक्ति होती है। मेथी की खेती के लिए ठंडी जलवायु अच्छी रहती है।
इसकी खेती के लिए औसत बारिश वाले इलाके सही रहते हैं अधिक बारिश वाले इलाकों में इसकी खेती नहीं की जा सकती है। छत्तीसगढ़ में इसकी खेती सफलता पूर्वक की जा सकती है।छत्तीसगढ में इसकी खेती सफलता पूर्वक की जा सकती है।

भूमि-प्रायः मेथी को सभी प्रकार की भूमि में उत्पादित किया जा सकता है परन्तु दोमट मृदा इसके लिए उपयुक्त रहती है। भारी मृदा तथा जलोढ़ मृदा वाली भूमि में मेथी सफलता पूर्वक पैदा की जा सकती है। मिट्टी का पी.एच. मान 6–7 के बीच होना चाहिए।

खेती हेतु आवश्यक तैयारी-मेथी की अच्छी फसल लेने के लिए खेत की उपयुक्त तैयारी आवश्यक है। इसके अन्तर्गत मृदा पलटने वाले हल से एक जुताई तथा देशी हल से 3–4 जुताई करके मृदा को नरम एवं भुरभुरी बना लेनी चाहिए। इसमें पाटा चलाकर नमी का संरक्षण करना चाहिए।

अगर खेत में दीमक की समस्या है तो पाटा लगाने से पहले खेत में क्विनालफास 1.5 फीसदी या मिथाईल पैराथियान 2 फीसदी चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से मिला देना चाहिए।

बुवाई व बीज की मात्रा-मेथी की बुवाई अक्टुबर के अन्तिम सप्ताह से नवम्बर प्रथम सप्ताह तक की जा सकती है। बुवाई 30 से.मी. दूर कतारों में करते हैं। इसमें प्रति हेक्टयर 20–25 किलाग्राम बीज काम में लिया जाता है व कसूरी मेथी में 10–12 किलो प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है बुवाई हेतु बीज की गहराई 5 से.मी. तक रखनी चाहिए। बुवाई से पूर्व ट्राईकोडर्मा 4 से 6 ग्राम प्रति किलाग्राम बीज दर से उपचारित करना लाभदायक रहता है।

खाद एवं उर्वरक-अच्छी फसल के लिए एक माह पूर्व 10–15 टन अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद डालकर खेत तैयार करना चाहिए। इसके अतिरिक्त 40 किलोग्राम फास्फोरस एवं 20 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर मृदा में अच्छी तरह मिला देना चाहिए। मुदा परीक्षण उपरान्त 5 किलोग्राम जस्ता एवं 10 किलोग्राम गंधक चूर्ण प्रति हेक्टेयर देना लाभकारी रहता है। मेथी भूमि को उर्वरा बनाने में भी मदद करती है क्योंकि इसकी जडो में नाइट्रोजन स्थिरीकरण जीवाणु पाये जाते है।

सिंचाई-इसकी फसल के अंकुरण के लिए खेती में पर्याप्त नमी रहनी चाहिए। नमी कम होने पर पहली सिंचाई बुवाई के तत्काल बाद करनी चाहिए। सामान्यतः 7 से 10 दिन के अन्तर पर सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है।

निराई–गुड़ाई-फसल की आरम्भिक अवस्था में खेत में खरपतवारों को हटाकर निराई–गुड़ाई से पौधों की वृद्धि अच्छी होती है। बुवाई के 30 दिन बाद फसल की निराई–गुड़ाई कर सघन पौधों की छटनी कर देनी चाहिए।

रसायन द्वारा खरपतवार नियंत्रण के लिए फ्लूक्लोरिलिन 0.75 किलोग्राम सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर या पेण्डामिथोलिन 0.75 सक्रिय तत्व अर्थात् 2.5 मिली. प्रति लीटर पानी में, इनमें से किसी एक को 750 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के दूसरे दिन छिड़काव कर भूमि में मिला देना चाहिए। छिड़काव कर भूमि में मिला देना चाहिए। छिड़काव के समय भूमि में पर्याप्त नमी होनी चाहिए।

कटाई व उपज- मेथी की फसल बुवाई के 25–30 दिन में पत्तियां तोड़ने के लिए तैयार हो जाती है। प्रायः 11 से 15 दिनों के अन्तर पर कटिंग की जा सकती है। 70 से 80 क्विंटल प्रति हेक्टयर पत्तियों का औसत उपज प्राप्त किया जा सकता है, व कसूरी मेथी का औसत उपज 90 से 100 क्विटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त किया जा सकता है, बीजोत्पादन हेतु एक बार कटिंग करने के बाद पौधों को फली आने के लिए छोड़ दिया जाता है।

जब फसल की पत्तियाँ झड़ने लगती है और पौधे पीले रंग के हो जाए तो पौधों को उखाड़कर छोटी–छोटी ढेरियों में रखा जाता है। सुखने के बाद फलियों को कुट कर दाने अलग कर लिए जाते हैं। साफ दानों को पूर्ण रूप से सुखाने के बाद बोरियों में भरा जाता है। एक हैक्टेयर में 15 क्विंटल तक दानों की औसत उपज प्राप्त की जा सकती है, व कसूरी मेथी के दानों का औसत उपज 6–7 क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त किया जा सकता है।

भण्डारण - मेथी दानो को ठीक ढंग से भण्डारित नहीं करने पर लम्बे समय बाद इसका रंग व खुशबू खराब होना शुरू हो जाते हैं अतः इसे प्लास्टिक लगे बोरों में भरकर सुरक्षित स्थान पर भण्डारित करना चाहिए। बीजों को प्रारंभिक नमी स्तर 7–8 प्रतिशत के साथ संग्रहित किया जाना चाहिए। सामान्यतः इसको टाट के बोरों में भरकर रखा जाता है लेकिन व्यापारीक के स्तर पर इसे कोल्ड स्टोरेज में भी रखा जा सकता है। कभी–कभी भण्डारण से पूर्व गंधक के धुएं से भी उपचारित किया जाता है। इससे भण्डारण क्षमता लगभग दो महीनों तक बढ़ जाती है।

पैकिंग-सामान्यतया मेथी टाट के बोरों में बिना प्लास्टिक की लाइनिंग के भरा जाता है लेकिन प्लास्टिक लगे टाट के बोरों में भरने से बीज नमी के सम्पर्क में आने से बच जाते हैं जिससे परिवहन व भण्डारण के दौरान कीट–व्याधि का प्रकोप नहीं होता है।

रोग व उसकी रोकथाम

छाछया रोग (पावडरी मिलडयू रोग)- छाछया रोग मेथी में शुरूआती अवस्था में पत्तियों पर सफेद चूर्णिल पुंज दिखाई पड़ सकते है, जो रोग के बढ़ने पर पूरे पौधे को सफेद चूर्ण के आवरण से ढक देते हैं, बीज की उपज और आकार पर इसका बुरा असर पड़ता है।

छाछया रोग की रोकथाम के लिए बुआई के 60 से 75 दिन बाद नीम आधारित घोल (अजाडिरैक्टिन की मात्रा 2 मि.ली.लीटर प्रति लीटर) पानी के साथ मिलकर छिड़काव करें। जरूरत होने पर 15 दिन बाद दोबारा छिड़काव किया जा सकता है। चूर्णी फफुंद से संरक्षण के लिए नीम का तेल 10 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के घोल से छिड़काव (पहले कीट प्रकोप दिखने पर और दुसरा 15 दिन के बाद) करें।

मृदुरोमिल फफुंद - मेथी में इस रोग के बढ़ने पर पत्तियां पीली पड़ कर गिरने लगती हैं और पौधे की बढ़वार रूक जाती है। इस रोग में पौधा मर भी सकता है। इस रोग पर नियंत्रण के लिए किसी भी फफुंदनाशी जैसे फाइटोलान, नीली कॉपर या डाईफोलटान के 0.2 फीसदी सांद्रता वाले 400 से 500 लीटर घोल का प्रति हेक्टेयर छिड़काव करना चाहिए। जरूरत पड़ने पर 10 से 15 दिन बाद यही छिड़काव दोहराया जा सकता है।

जड़ गलन-यह मेथी का मृदाजनित रोग है। इस रोग में पत्तियां पीली पड़ कर सुखना शुरू होती है और आखिर में पुरा पौधा सुख जाता है। फलियां बनने के बाद इनके लक्षण देर से नजर आते हैं। इससे बचाव के लिए बीज को किसी फफुंदनाशी जैसे थाइरम द्वारा उपचारित करके करनी चाहिए। सही फसल चक्र अपनाना, गर्मी में जुताई करना वगैरह ऐसे रोग को कम करने में सहायक होते हैं।

कीट एवं उसकी रोकथाम

माहू एफीड- रस चूसक कीट जो आमतौर पर मेथी के कोमल भागो व फूलो का प्रभावित करता है पत्तिया सिकुड जाती है इसके बचाव के लिये डाईमेथोएट 0.03 प्रतिशत और मिथाईल डीमेटोन 0.03 प्रतिशत का स्प्रे उपयोगी होता है।

मेथी की नई पत्तियो पर माइट का संक्रमण अधिक गंभीर होता है। इसके बचाव के लिये इथियोन 50 ईसी 0.025 प्रतिशत और फास्फोमिडान 85 डब्ल्यू एस पी 0.03 प्रतिशत इमल्सन का छिडकाव करें।